दृष्टान्तसमुच्चय।

इसमें १६४ दृष्टान्त हैं। दृष्टान्त (मिसाल) एक ऐसा पदार्थ है कि उपदेष्टा (समझाने वाला) कठिन कठिन विषय को भी इसके द्वारा जिज्ञासु को (समझने वाले को) बहुत जल्द समझा देता है। इसमें व्यर्थ हंसी दिल्लगी या समय के खोने वाले दृष्टान्त नहीं हैं किन्तु प्रत्येक दृष्टान्त कोई ईश्वर भक्ति कोई ईश्वर की स्तुति कोई कर्म विवेचना कोई लोक परलोक कोई यज्ञ आदि विषयों की उत्तमता को दिखाते हैं। कि जिससे प्रत्येक मनुष्य साधारण वा पं० हर विषय को समझ अपने मुख्य कर्त्तव्य वेद शास्त्रों के सिद्धांत तथा सत्पुरुषों के चरित्र जान तदनुकूल व्यवहार करके दोनों लोकों में यश के भागी बनें। तिस पर भी इतनी और विशेषता लेखक ने दे रक्खी है कि पुस्तक आरम्भ करने से चित्त यही चाहता है कि बिना इसको पूरा किये अधूरा नहीं छोड़ना चाहिये। भाषा भी इतनी सरल है कि प्रत्येक विषय जल्द ही समझ में आजाता है। स्त्री और पुरुष दोनों ही के लिये यह लाभकारी है मंगाकर देखिये। मूल्य १।) सजिल्द १॥) डाकव्य ≈)

ओ३म्

'हिन्दू' 'आर्य' नमस्ते का अनुसन्धान।

समय ने ऐसा पलटा खाया, और अविद्या ने वह दिवस दिखाया कि लोगों को अपने शुद्ध नाम आदि कहलाने का भी विवेक न रहा। समस्त संसार में उत्तम सभ्य और यथार्थ नाम भुलाकर एक गुप्त, कल्पित, असभ्य व निकृष्ट कलंक से हमारे भ्राताओं को प्रेम हो गया, और सच्चे नाम की प्रतिष्ठा दूर होकर उसका जानना व मानना भी मिट गया, और अविद्या का यहां लों बसेरा हुआ। कि आर्य के स्थान पर हिन्दु और आर्य्यवर्त्त के स्थान पर हिन्दोस्तान कहलाने व कहने लगे? शोक! ३! अतएव उचित जान पड़ा कि विस्तार पूर्वक इसका अनुसन्धान करके सत्यासत्य का पूरा प्रकाश किया जावे। जिससे विरुद्धपक्ष के पुरुषों को कुछ बोलने का स्थान व हिन्दु नाम को कई कारणों से बुरा जानते हैं। यथाः—

(१) हमारी जाति का हिन्दु नाम किसी संस्कृत पुस्तक में नहीं लिखा वेद शास्त्र व पुराणों से लेकर सत्यनारायण की कथा (जिसको बने थोड़ा समय हुआ)

लो मे भी कहीं इस का चिन्ह नहीं मिलता। अतः—हमारा नाम हिन्दू नहीं।

(२) कभी किसी दैनिकस्मृति (डायरी) तिथि पत्र, रोजाना वही, जन्मपत्री, टेवा आदि में भी हिन्दू या हिन्दी शब्द व हिन्दोस्तान आदि नाम नहीं लिखे गये जिससे भली प्रकार सिद्ध है कि हम हिन्दू नहीं हैं।

(३) हमारे यहां की भाषा पुस्तकों में भी (यही नहीं कि जो मुसल्मानी समय के प्रथम की रची हैं। किन्तु इस्लामी समय की रचित पुस्तकों में भी) यह शब्द प्रयोग में नहीं आये, यहां लों कि किसी धार्मिक वा जाति रीति के समय अब तक हिन्दू आदि शब्द कार्य में नहीं लाये जाते हैं अतएव किसी भांति स्वीकार नहीं कि हिन्दू नाम हमारा हो।

पादरी टामसहावल अपनी "तशरीह अस्माय हिन्दू आर्य्य" नाम पुस्तक में कहते हैं कि यह हिन्दू शब्द उस नदी के नामसे बना है, जो सिन्धु कहाती है, क्योंकि प्रायः शब्द जो संस्कृत से फ़ारसी में आगये हैं, वह इस प्रकार बदले हुए पाये जाते हैं। जैसे सप्ताह के हफ्ताह दशम से दहम, सहस्र से हज़ार इसी भांति सिन्धु का हिन्दु होगया, ऐसा जान पड़ता है। जिससे प्रयोजन है कि सिन्धु नदी के तट के निवासी हिन्दू हुये।

उत्तर-पादरी साहब इतना तो मानते हैं कि यह शब्द फ़ारसी का है, परन्तु संस्कृत से आया हुआ

अर्थात् संस्कृत के सिन्धु से हिन्दू बना है, ऐसा कहते हैं। विदित हो कि यह भी अशुद्ध है, क्योंकि यूनानी लोग, रूम, ईरान, व अफगानिस्तान के मार्ग से आर्य्यावर्त में आये और मार्ग में जैसा किसी देश का नाम सुना, वैसा ही प्रयोग किया, अक्षर "स, का "ह" से बदल जाना। हमने माना, परन्तु फारसी में, संस्कृत में किसी भांति नहीं। हां संस्कृत में सिन्धु और सिंधव (देखो निघण्टु १, १३ और उणादिकोप १, ११) दोनों नदी को कहते हैं पर सिन्धु कदापि आर्य्यावर्त निवासियों के लिये नहीं वर्ता गया, और न उचित है, लेकिन फारसी लुगात (कोषों) के अनुसार जो इस शब्द के अर्थ हैं वह सहायक जान पड़ते हैं।

सिन्द—"दर फारसी वकसूरे सीन वमानी—हराम-जादा (जारज) बद (बुरा) शरीर [दुष्ट) काफि़या मायूब (बुरा) काफिया" देखो, कश्फ, सिराज, मुन्तखिब वो गयास व लतायफुल्लुगात्। भारत की सीमा के निवासी विदेशियों को लूट लिया करते थे, इसलिए उनका नाम विदेशियों ने सिन्धु या हिन्दू रक्खा। और दोनों शब्द फारसी में एक ही अर्थ रखते हैं, और इस देश की बोल चाल में भी नकब को 'सैंध, कहते हैं। और अफ़ग़ानी भाषा में नदी को सेन कहते हैं। जिस से सैंध लगाने वाले का नाम है, यह सिन्धू या हिन्दू सिद्ध होता है, किसी उत्तम पुरुष का नहीं। फिर आर्यों

का ? अतः आप का यह कथन सब भांति अनुचित है।

पादरी—सम्भव है कि यह हिन्दू नाम संस्कृत के शब्दों से बना हो। अर्थात् हीन, और दोष से जिसके अर्थ निर्दोष के हैं और सम्भव है कि अधिक प्रयोग में आने के कारण कुछ शब्द छुट भी गये हों, जैसा कि हिन्दुस्थान के स्थान पर हिन्दुस्तान बोला जाता है। और बुद्धि भी स्वीकार करती है कि हिन्दुओं के पूर्व पुरुषों ने जो बुद्धिमान् थे, इसी नाम को जिस के अर्थ निर्दोष के हैं अपनी जाति के लिए स्वीकार किया हो।

उत्तर—आप का कल्पित सम्भव संस्कृत के अनुसार महा असम्भव है, क्योंकि संस्कृत के किसी कोष या इतिहास में इसका पता नहीं मिलता, अतएव हिन्दूओं के पुरुषाओं का प्रचरित किया हुआ यह नाम नहीं। किन्तु अन्य जातियों का आर्यों के विषय में कलंक है। और यह शब्द हिन्दुस्थान भी महा असम्भव और बेजोड़ है क्योंकि एक फ़ारसी दूसरा संस्कृत है। हां—इस के मानने से किसी को नाहीं नहीं की, जिस भांति और भाषायें संस्कृत से निकली हैं। उसी भांति संस्कृत के स्थानसे फ़ारसीका "सितां" बना है—परन्तु अरबिस्तान, अफ़गानिस्तान, फिरङ्गिस्तान, इंगलिस्तान, जाबुलिस्तान, तुर्किस्तान, बिलोचिस्तान, गुलिस्तां, बोस्तां, दबिस्तां, ताकिस्तान, नखिलिस्तान, चमनिस्तान, भांति हिन्दुस्तान भी है कोई शब्द इसमें से छूटा हुआ नहीं है।

अतः यह आप का कथन अत्यन्त निर्मूल हैः—यह । हिन्दुओं की बनावट है नहीं २ महाशय यह विदेशियों का लगाया कलङ्क है। और सबसे अधिक यह मुसल-मानों के कारण काम में लाया जाता है जैसे कि इसके प्रमाण में निम्न लिखित साक्षियां हैं:-

(१) हज़रत मामयः की माता का नाम हिंदिया था, क्योंकि वह श्याम वर्ण (कालेरंङ्ग) की थी॥ (मसालिब)

(२) "हिन्द, बिल्कसर, नाम ज़ने कि क़ातिल अमीर हम्ज़ाबूहद अस्त" (मुंतखि़ब)

अर्थ—हिंद एक स्त्री का नाम था जिसने अमीर हम्ज़ा का वध किया (अनुवा०)

(३) "हिन्दू—दर मुहावरे फ़ारसियां ब मानी दुज़द बा रह ज़न गुलाममें आयद (ख़यावां गयास)

अर्थ-हिन्दू शब्द फ़ारसियोंके महाविरे में चोर राह कूटने वाले व गुलाम अर्थ में आता है (अनुवादक)

(४) हिन्दूज़न—ज़नेसाहराराग़ोयंद अर्थात् जादूगरनी स्त्री (गयास—करीम)

(५) हिंदू या अर्थात् हिन्दोस्तान, या दवात सियाही " कश्फ़ "

(६) हिंदुपपीर—ज़ोहल कि दर आस्माने हफतुमअस्त व पास्वाने मुहकस्त व रंग सियाह दारद, अक-सर पासिबाने हिंद कि इशारा सादही गोयंद रंग सियाह मिबाशद (कश्फ़)

अर्थ-शनैश्चर सो सातवें आस्मान में है और देश का गृहथान (रक्षक) है, रङ्ग उसका काला है अक्सर हिंदोस्थान के वासी जिनको सारही या साथी कहते हैं उनका रङ्ग काला होता है। [अनुवादक]

(७) हिन्दू चर्ख हफ्तुम, बिलफल्ल यानी ,जोहल कि नाम नहस व सियाह अस्त। (कश्फ बुर्हान)

अर्थ-शनैश्चर जो अशुभ व काला है। (अनुवादक)

(८) हिंदुए वारांकवां व हिंदूपलिपहर हफतुमी, व हिंदूए गुंबदेगर्दी, जोहल (शनैश्चर) (कश्फ.)

(९) हिंदूयतो, बिलफल्ल गुलाम व बंदये तो(कश्फ़)

अर्थ-तेरा गुलाम, (अनुवादक)

(१०) हिन्दू—बकस्र गुलाम, बंदह, काफि.र व तेग, (कश्फ.)

(११) चार हिन्दू दर यके मसजिद शुदंद बहरे ताअत राके ओ साजिद शुदंद।

अर्थ-चार हिन्दू (गुलाम) एक मस्जिद में इबादत करने व सिजदा करने गये। (अनुवादक)

(१२) ज़ुल्फ़ दिलबंदश सबारा बन्द दर गर्दन निहद। व हवादाराने ज़हरो हीलये हिन्दू बबीं।

अर्थ-उसकी यानी माशूक़ की दिलफरेब ज़ुल्फ हवा की गर्दन में भी गिरहे लगाती है। इस जादूगरनी के फ़रेब को देखो हवा की तरह राह चलने वालों के साथ क्या कर रही है (अनुवादक)

(१३) अगर आं तुर्कशीराज़ी बदस्त आरद दिलेमारा,
बख़ाले हिन्दुअश बख़्शम समर्कंदा बुख़ारारा
(हाफ़िज़)

अर्थ-अगर वह शीराज़ का सिपाही (माशूक मेरे दिल को अपने कब्ज़े में लावे तो मैं उसके स्याह तिल पर समरकन्द व बुखारा निछावर करदूँ (अनुवादक)

(१४) ख्वाजयेरा बूद हिन्दू बन्दये पर्वरीदा कर्दा आरा जिन्दये (मस्नवीरूमी)

अर्थ- एक ख्वाजे का एक काफ़िर गुलाम था उसने उसको पाला और जीवित किया। (अनुवादक)

(१५) दो हिन्दू बर आयद जे हिंदोस्तान। यके दुजद बाशद यके पास्बान (सादी)

अर्थ-जो हिन्द से दो हिन्द आवें तो एक उनमें से एक चोर हो दूसरा चौकीदार (अ० वा०)

(१६) दो हिन्दूये अज़ पसे संग सरबर आवुर्दन्द (गुलिस्तां)

अर्थ-पत्थर की आड़ से दो चोर दिखाई दिये [अनुवादक]

(१७) हिन्दूयनफ्त अन्दाजी मैं आमोख्त्—हकी मैं गुफ्त तुरा कि खाना नईन अस्त— बाजी न ईन अस्त (गुलिस्तां)

अर्थ-एक हिन्दू आग्नि वपाना सीखता था, एक बुद्धिमान् ने कहा ? कि तेरा घर पाँस का है। अर्थात्

छप्पर है, यह खेल नहीं है। यहां हिन्दू का अर्थ गवांर झोंपड़े का रहनेहारा, विला सोचे काम करने वाला है। (अनुवादक)

(१८) चे हिन्दू हिन्दुये काफि.र। चे काफि.र काफि.र रहज़न। चे रहजन ईमां। (चमने बेनज़ीर)

अर्थ–कैसा हिन्दू, हिन्दुय काफि.र। कैसा काफि.र काफ.रे रहजन कैसा रहज़न रहज़ने ईमान का। (अनुवादक)

(१६) ख.ालेनबर भारिजे आं शाहेद मस्त अस्त। हिंदू बचा ईस्ताकि खुर्शेदपस्त अस्त। (कुल्लियात)

अर्थ–माशूक के गाल पर तिल नहीं है। वह एक हिन्दु का लड़का है जो सूर्य्य को पूज रहा है। अ०वा०

(२०) जहाँ हिन्दुस्त तारखस्त न गीरद, बगीरश सुस्तता सखस्त न गीरद (शीरीख सरो)

अर्थ–दुनियां चोर या डाकू है। ऐसा न हो। तेरा असवाब ले लेवे। तू उसके साथ सख्ती कर। ताकि वह तरे साथ सख्ती न कर सके। (अ० वा०)

(२१) दोगेसूयश दो हिन्दूये रसनबाज। जेशम-शादे सर अफराजश रसनसाज (जुलेखां)

अर्थ–माशूक की जुल्फें दो नट हैं। जो उसके कद (शरीर) पर खेल रहे हैं (अ० वा०)

(२२) यके खाले सियह जाकर्दे बर कुञ्जे लबे लालश। तो गोई बर लबे आवेबका बेनाशिस्त हिंदूये (जहीर फ.ार्याबी)

अर्थ-माशूक के लाल होंटों के निकट जो तिल है। वह ऐसा जान पड़ता है। कि अमृतकुण्ड के पास एक हिंदू बैठा है (अ० वा०)

(२३) कुंनद दर पेश पाये आंनिगारी सिजदहा जुलफश। चलेकारे व अज आतिशपरस्ती नेस्त हिन्दूरा। (दीवानसाक़ी)

अर्थ- उसके रङ्गे हुये (महावर लगे) पावों पर जो उसकी जुल्फ लटकती है आश्चर्य्य क्या। हिन्दू का काम ही अग्निपूजा है। (अ०वा०)

(२४) मन आं तुर्के सियाह चश्मम् बरीं बाम कि हिन्दूये सफेदस्त शुद मेरा नाम (शीरीं खुसरो)

अर्थ-मैं इस अटारी पर ऐसा काली आंख वाला सिपाही हूं कि मेरा नाम सफेद हिन्दू हुआ। और यही शब्द फारसी अर्बी इबरानी आदि भाषाओं में लगभग इन्हीं अर्थों में प्रयोग किया गया है। किंतु ऐसीशायद ही कोई पुस्तक होगी जिसमें यह शब्द इन अर्थों में न आया हो। जिससे सब भाँति सिद्ध है।कि यह हमारा नाम नहीं, सर्वथा त्याग करने योग्य है और शत्रुता व डाह से रक्खा गया है, जैसे कि हमने उन के लिये यवन म्लेच्छ, आदि।

(पादरी) फ़िर संस्कृत भाषा में नाम आर्य अ फारसी में ईरानी, दोनों ही एक मस्दर या धातु 'आर' से निकले और आर्य व ईरानीकि असल अर्थ हल चला

कर खेती करने वाले के हैं और वास्तव में यह नाम आर्य जाति के लोगों का उस समय था जब यह केवल खेती हलवाही करने से रोटी कमाते थे।

उत्तर-खेद का स्थान है कि जिनको मसदर या धातु का ज्ञान नहीं वह भी आज़ोर करने पर कटिबद्ध होजाते हैं। 'आर' धातु नहीं किन्तु 'ऋ' है जिससे संस्कृत में आर्य्य और अर्य्य नाम बने हैं। और इसीसे फार्सी पहलवी में ईरानी बना है परन्तु आर्य्य व अर्य्य भी एक नहीं वह और रीतियों से बना है और यह और से पहला समस्त जाति ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य शूद्र का नाम है और दूसरा केवल वैश्य का जैसा वैश्यों के कर्म व गुन में मनुस्मृति अध्याय १ श्लोक ९० में)-

पशूनां रक्षणं दानमिज्याध्ययनमेव च।
वाणिक्पथं कुसीदं च वैश्यस्य कृषिमेव च॥

पशुओं की रक्षा, दान देना, यज्ञ करना, पढ़ना, व्यापार करना, ब्याज लेना, खेती करना, सात काम लिखे हैं। और पंजाबी मसल है—उत्तम खेती मध्यम ब्यापार। निषिद्ध चाकरी भीख गमार" आर्य के अर्थ संस्कृत के अनुसार महान्, श्रेष्ठ, विद्वान्, धार्मिक व ईश्वरभक्त के हैं और ऐसा ही कथन मैक्समूलर साहब का भी है। देखो सायन्स आफ. दी लैंगवेज पृष्ठ २७५) कि "आर्य्य के अर्थ महान् विद्वान् देवता और सभ्य व शीलवान्, देवताओंकी प्रतिष्ठा करनेवाला है। क्योंकि

यह शब्द दस्युओं के विरुद्ध है "।

और समस्त आर्य्य कभी खेती नहीं करते थे किन्तु आदि ही से वह चार भागों में विभाजित हैं जिसकी आज्ञा पवित्र वेद में भी है। मानों वही शिक्षा इसकी जड़ है। अर्थात् विद्या का पढ़ना पढ़ाना यज्ञ करना कराना दान देना लेना जो मुख्य कर्म हैं उनका करने वाला ब्राह्मण। विद्या का पढ़ना दान देना यज्ञ करना देश व जाति की रक्षा करना जो शारीरिक बल संबंधी हों इनका कर्त्ता क्षत्रिय और उपरोक्त लेखानुसार देशा टन करके व्यापार करने हारा वैश्य। और महामूर्ख सेवक का नाम शूद्र है। परंतु सदा आर्य्य जाति में से वैश्य कृषि करने हारे रहे। या खेती करने हारा वैश्य नाम से प्रसिद्ध रहा। पर समस्त मनुष्यों का कार्य प्राकृतिक नियमानुसार खेती ही करना नहीं है। नहीं तो विद्या शूरता रक्षा देशकी सेवा परोपकार कौन करे, और इसी प्रकार ईरानी जाति भी विभक्त है। पुस्तक "दबिस्ताने मज़ाहब "और ".जिन्दावस्ता " व " आबे· हयात "से उत्तम प्रकार प्रमाणित है। और इसी की पुष्टि मैक्समूलर के यहां से भी प्रकट है। अर्थात् पारसी जन आर्यावर्त्त से उठकर ईरान में बसे। देखो सायंस आफ दी लैंगवेज पृष्ठ २८८) और इतिहास भी इसकी साक्षी देता है कि प्राचीन यूनानी व रोम वाले व अंग्रेज व फ्रांसीसी व. जर्मनी व पारसी आदि

सम के पूर्व पुरुष आर्य्य थे (देखो तवारीख हिन्द) अतएव उचित है कि आप इस भूल की भी दवा करें। और इस प्रकार के कल्पित वा मनगढ़त दावों से हाथ उठावें।

(पादरी) जैसे कि इस पंजाब में खेती करने वाले आराईं कहाते हैं।

(उत्तर) जनाब ! आराईं शब्द संस्कृत का नहीं किंतु पंजाबी है। जहां लौं विचारपूर्वक दृष्टि दी जाती है, आराईं नाम जाति मुसलमान ही हैं। हिन्दू कोई नहीं। जिससे तात्पर्य्य यह निकलता है कि यह नाम उनका अरबी के राई से बिगड़ा हुआ है और किंचित परिवर्तन उच्चारण 'पेन' से (जो कुछ कंठ द्वारा बोलने में कठिन है) उसका राई या आराईं बोलनी किंचित् भी कठिन नहीं। (राई-शबां-निगहबान) अर्थात चौपायों का चराने वाला (गयास)। और यही आप का प्रयोजन है। अतः यह शब्द भी अरबी के राई से बना है संस्कृत का नहीं।

(पादरी) और प्रायः इस पेशा के लोग पशुओं विशेष कर बैलों पर अत्याचार किया करते हैं॥ और अनबोल पशुओं को अपनी छड़ी से जिसके सिरे पर एक लोहे की नोकदारकील लगी हुई होती है चुभो २ के हाँका करते हैं। और इस सबब से वह नोकदार कील 'आर' कहाती है।

उत्तर-हजरत ! यह उन निर्दयं मूर्खों का महा अत्याचार है और शास्त्रानुसार- ऐसे जन दण्ड पाने योग्य हैं जैसे कि महाराजा जम्बू कपूर्थला नाभा झींद जोधपुर आदि के राज्यों में कोई काम में नहीं लाता। जो लाता है दण्ड पाता है। देखो (रणवीरदण्ड आदि) और पटाला में भी कुछ मुसलमान व हिन्दू और ईसाई साहेबों के उद्योग से पशुक्लेश निवारिणी सभा अन्जुमन हम्दर्दी हैवानात) बनी हुई हैं। और राजनियम भी ऐसे मनुष्यों के लिए प्रचरित है (देखो एक्ट५ सन् ६६ दफअ ३४)। 'आर' शब्द भी संस्कृत का नहीं, किन्तु फार्सी का है। जैसा कि अर्रा काबुल अफगानिस्तान पेशावर में लड़की चीरने व जूता सीने वाले, लोहे के औजार को कहते हैं सम्भव प्रतीत होता है। कि फारसी के इन शब्दों से ही यह शब्द इन निर्दय मूर्खों ने। सुन सुना कर प्रचरित किया हो तो आश्चर्य नहीं। किन्तु ऐसा निश्चय होता है।

पादरी-अतः जब इस जाति ने धीरे२ विद्या शिल्प व वाणिज्य में उन्नति की तो आर्य्य नाम केवल कृषक के लिए था छोड़ दिया और आर्य्य नाम के स्थान पर हीनदोष को जो धीरे २ हिन्दू होगया है अपनी जाति पर प्रचरित कर लिया है " हिन्दू „ ' आर्य , नाम की अपेक्षा अधिक इस जाति में प्रसिद्ध होगया है।

उत्तर-आपका यह आक्षेप भी अत्यन्त कच्चा है।

कभी किसी संस्कृत के व प्राकृत के विद्वान् ने यहनाम हिन्दू अपनी जाति का नहीं लिखा परन्तु परवशता से व हाकिम का हुक्म मृत्युसमान जान कर मुसलमानों के समय से फारसी का प्रचार होने से कार्यालयों में यह नाम लिखा जाने लगा, और अन्त में सम्पूर्ण देश मुसलमानों का हिन्दू गुलाम हो गया। आप का यह कथन कि जब इस जाति ने विद्या शिल्प। वाणिज्य में उन्नति की तो आर्य नाम छोड़ दिया। महाव्यर्थ व असत्य है। किन्तु धोखा देना है। जब तक शिल्प वाणिज्य में उन्नति रही तब तक आर्य नाम रहा और जब से आलस्य व इन्द्रियारामता ने घेर लिया विद्या शिल्प वाणिज्य व देशाटन से हाथ उठाया, हिंदू काफिर गुलाम नामवहशी होगये जैसा कि तवारीख हिंद भी बताती है कि आर्य लोग सदा फिलासफी के प्रेमी रहे और गणित व, विज्ञान के प्रथम गुरु यही हैं। इसी कारण वह आर्य अर्थात् श्रेष्ठ कहाते थे। ईरान का, दारा बादशाह भी आर्य होने को स्वीकार करता था। कि मैं आर्य हूं आर्यों की संतान से हूं। क्यों कि उस प्रपितामह (पददादा) का नाम पयरयारनामियां था। देखो साइंस आफ दी लैंगवेज मैक्समूलर कृत पृष्ठ२८०

पादरी–जो कहते हैं कि यह नाम हमारी जाति का हमारे शत्रुओं अर्थात् मुहम्मदियों ने रक्खा है। यह

महा अशुद्ध ही नहीं किंतु धोखा है

उत्तर-यह नाम हमारी किसी पुस्तक धार्मिक ऐति-हासिक या विद्यासंबंधी में कहीं नहीं है । और विरोधियों व विदेशियों की किताबों मे सैकड़ों स्थानों पर है। जिससे नमूने के लिए थोड़े स्थान हमने लिख दिये । अतएव इस दशा में हम आपके इस इन्कार को इसके अतिरिक्त कि आप जानते हुये भी नहीं मानते और क्या कहें । केवल इसलिये जिससे हिन्दू भाइयों को सत्य वेदोक्त धर्म से पृथक् रख के धोखा दें चाप-लूसी करके ईसाई बना लिया करें, और उनको आर्य्य नाम से घृणा हो जाय । पादरी साहब ने यह जाल फैलाकर उनको मार्ग भुलाना चाहा है और कुछ नहीं ।

अतएव प्रत्येक बुद्धिमान् जान सकता है कि यह नाम जब हमारे विरोधियों की पुस्तकों में [चाहे वह ईरानी हों वा अफगानी अथवा यूनानी ऐराबी वा रूमी] उपस्थित है । तो उनका दावा महान असत्य है जिसपर हमें कहना पड़ेगा कि पादरी ने धोखाबाजी से काम लिया । और सत्य से मुख मोड़ा । हम उनको [चेलेञ्ज] करते हैं कि वह या उनका कोई और इलहामी मित्र या शेपभोजी [मिर्जा गुलाम अहमद आदि] हिन्दू नाम किसी संस्कृत पुस्तक में दिखादें । और सिद्ध व प्रमाणित करादें. नहीं तो यह छल कपट

का तौक कयामत लों यहूदा *इसकरलूनी व +यजीद की भांति दगाबाज के गले में रहैगा।

पादरी—क्योंकि यह नाम उन किताबों में पाया जाता है। जो मुहम्मद साहब की उत्पत्ति से बहुत पहिले लिखी गई थी जैसे—अस्तर की किताब जो हजरत मुहम्मद की उत्पत्ति से एक सहस्र वर्ष प्रथम लिखी गई थी। उसके पहिले बाब (अध्याय) की पहली आयत् में "हिन्दोस्तान" है। इसी भांति 'फलावेसजूरुफर" यहूदी इतिहास लेखक भी अपनी 'पुस्तक में "हिन्दोस्तान" का नाम लिखता है। जो मुहम्मद साहब की उत्पत्ति से ६०० वर्ष प्रथम हुआ है (देखो उस किताब का आठ बाब ५) अतः प्रकट है कि मुहम्मद साहब के बहुत पहले यह देश "हिन्दोस्तान" के नाम से प्रसिद्ध था और इस के निवासी हिंदू कहलाते थे।

(उत्तर) यह प्रमाण भी आप के विश्वास की दृढ़ता नहीं करता क्योंकि हमारा दावा यह है कि हमारी पुस्तकों म हिंदू नाम नहीं है और न संस्कृत का शब्द

---

* यह ईसा मसीहा का एक चेला था। जिसने तीस रुपये के लोभ से अपने गुरू ईसा को पकड़वा दिया था। (अनुवादक)

+ यह माविया का बेटा था। जिसके द्वारा इमाम हसन व हुसेन धोके से वध किये गये। (अनुवादक)

है शेष रहा अस्तर में या यहूदियों के इतिहास में होना।

प्रथम पुस्तक सिकन्दर के समय के निकट बनी, हुई है (देखो अस्तर कि किताब इबरानी बाइबिल पृष्ठ ११८७ छपी हुई सन् १८५८ ई० लंडन) मसीह से ५२१ वर्ष पहले।

और दूसरी मसीह के पीछे की है। और जहां तक अन्वेषण हो चुका है यही समय है। जब से बुरा नाम हमारे देश के लिए विदेशियों ने प्रयोग करना आरम्भ किया। आप के कथन से भी यह नाम विदेशियों की पुस्तक में लिखा पाया जाता है हमारे देश की पुस्तकों में नहीं। अतः यह भी हमारे दावे का प्रमाण है और आप के लिए हानि कारक क्यों कि हमारे यहां प्रसिद्ध है कि यह नाम यवन लोगों ने रक्खा है।

साधारण आक्षेप-हिन्दू नाम इन्दु से बना है और इन्दु कहते हैं चन्द्रमा को अर्थात् चन्द्रवन्शी।

उत्तर—हम मानते हैं कि इन्दु चन्द्रमा को कहते हैं परन्तु संस्कृत में यह कैसे बन गया। और इसके अतिरिक्त क्या समस्त हिन्दू चन्द्रवन्शी हैं। या सूर्यवन्शी ब्राह्मण वैश्य, शूद्र नहीं है, और इन्दु केवल चन्द्रमा को कहते हैं वंशी कहां से आगया और किस के अर्थ हुए और क्या यह नाम इस धातु से भी किसी संस्कृत पुस्तक में आज तक अङ्कित नहीं है। और क्या चन्द्रवंशी के अतिरिक्त और लोग अपने आप को हिंदू नहीं कहलाते हैं या सूर्यवंशी से और नाम निकला है और

कृथा शाप को छोड़कर संसार भर में किसी को यह बात मालूम नहीं। जब कि इन ऊपर लिखी हुई बातों में से कोई भी ठीक नहीं हो सकती है अतः यह बात भी महानिर्मूल है। क्योंकि अबतों चन्द्रवंशी सूर्यवंशी इत्यादि शतशः गोत्रों की जातियां आर्य्यावर्त में उपस्थित हैं परन्तु हिंदु का चिन्ह भी नहीं। अब कुछ थोड़ा सा इस बात का भी प्रमाण दिया जाता है। कि हमारा नाम आर्य्य किनर पुस्तकों में लिखा है। अधिक ग्रंथ प्रमाण के विचार से मूल पाठ प्रमाण सहित लिखे जायेंगे।

(१) ऋ० म० १ सू० १०३—

सुजातूँसमोश्रद्धधानश्रोजः पुरोविभिन्दन्नचर-द्विदासीः विद्वान्वज्रिन्दस्यवेहेतिमस्यार्य्य-सहोवर्द्धयाम्नमिन्द्रः ॥

(२) ऋग्वेद मंडल १ सूक्त ५१ मन्त्र ८—

विजानीह्यार्य्यान् ये च दस्यवो बर्हिष्मते रन्धयाशासदव्रतान् । शाकीभव यजमानस्य चोदिताविश्वेत्ता ते सधमादेषु चाकन ॥

(३) मनुस्मृति अध्याय २ श्लोक २२ तक—

आसमुद्रात्तु वै पूर्वादासमुद्रात्तु पश्चिमात् ।
तयोरेवान्तरं गिर्य्योः राय्यावर्त्त विदुर्बुधाः ॥

(४) मनुस्मृति अ० १० श्लो० ४५—

मुख वाहूरुपज्जानां या लोके जातयो वहिः।
म्लेच्छवाचश्चार्य्यवाचः सर्वे ते दस्यव स्मताः ॥

(५) न्यायदर्शन अ० १ सू० १० वात्स्यायनभाष्य
ऋष्यार्य० इत्यादि ।

केवलमामकभागधेय पापरसमानार्यकृतमङ्गल
भेषजाच्च ।

(७) काशिका अ० ४ पाद १ सूत्र० ४६—

इन्द्र वरुणभवशर्वरुद्रमृडहिमारण्ययवयवनमातु-
लाचार्य्याणामानुक् ।

इसपर काशिकार का भाष्य—

आर्य्य क्षत्रियाभ्यां वा । आर्य्याणी आर्य्या ।

(८) गीता अध्याय २ श्लोक १०—

अनार्य्य जुष्टमस्वर्ग्यमकीर्तिकरमर्जुन ।

(६) भारत उद्योगपर्व

श्रुतं प्रज्ञानुगं यस्य प्रज्ञा चैव श्रुतानुगा ।
असंभिन्नार्य्यमर्यादः पण्डिताख्यां लभेत सः ॥

(१०) पञ्चतन्त्र, हितोपदेश प्रथम अध्याय आर्य
(११) ,, द्वितीय अध्याय आर्य
(१२) ,, तृतीय अध्याय आर्य
(१३) ,, चतुर्थ अध्याय आर्य
(१४) ,, पञ्चम अध्याय आर्य
(१५) वाल्मी० रामायण बा० कां० सर्ग १० श्लोक १६
व ३५ ॥

सर्वदाभिगतः सद्भिः समुद्र इव सिन्धुभिः ।

आर्यः सर्वसमश्चैव सदैव प्रियदर्शनः ॥

(१६) गत्वा तु स महात्मानं रामं राम पराक्रमम्। ·
अयाचद्भ्रातरं तत्र आर्यभावपुरस्कृतः ॥

(१७) वाल्मीकीय रा० य० किष्किन्धा काण्ड सर्ग १६
श्लो० २८ सुखवे पुनरुत्थाय आर्य पुत्रेति वादिनी।
रुरोद सा पतिद्वन्द्वसंवीतम् मृत्युदामभिः ॥
डिक्शनरी कलां (बड़ी) संस्कृत व अंगरेजी
छपी हुई कलकत्ता पृष्ठ १२४ सन् १८६४ ई०

(१८) आर्या (१६) आर्य्यक (२०) आर्यगृह्य
(२१) आर्यपुत्र (२२) आर्यप्राय (२३) आर्यरूप
(२४) आर्यलिंगिन (२५) आर्यवर्त्त (२६) आर्यदेश
(२७) आर्यगीत (२८) "अहम् आर्यः" हेमकोष प्रथम
कांड (·६] "देवार्यशातनन्दनः" मृच्छकटिकनाटक।
कोषशब्दार्थ भानु से-पृष्ठ ५० सन् १८६५ में छपी हुई,
लाहौर ॥

(३०) आर्य (३१) आर्यक (३२) आर्यपुत्र (३३)
आर्यमित्र (३४) आर्यवर्त्त।

(३५) आर्य से ही ईरान व आर्मेनिया: यह शब्द भी
निकलते हैं और "एरी" भी आर्य से बना है। आ·
र्मिनि यनों के यहां उसके अर्थ शर वीर के हैं।
(देखो साइन्स आफ दी लैंगवज पृ० २८१)

(३६) जो देश आर्यों के रहने का स्थान है उसका
नाम एरिया है यह जिन्दवस्ता में लिखा है।
(देखो सां० आ० लैं० Scince of language पृष्ठ

२८१ मैक्समूलर)

(३७) गुरुविलास-जो तुम सिक्ख हमारे आरज।
देव साथ धर्म के कारज।

(३८) विवेक विलास ग्रन्थ में बौद्धों का मत ऐसा
लिखा है।

बौद्धानां सुगतोदेवो विश्वं च क्षण भंगुरत् ।
आर्यसत्याख्यया तस्य चतुष्टयमिदं क्रमाद्र ॥

(३९) प्रति दिन का सङ्कल्प।

ब्रह्मणो द्वितीयप्रहरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे ।
जम्बूद्वीपे आर्यवर्तान्तरगते-इत्यादि ॥

इससे प्रत्येक बुद्धिमान् जान सकता है कि हमारा नाम आर्य है या हिन्दू और मुल्क का नाम आर्यावर्त है या हिन्दुस्तान। हमने सत्याऽसत्य के प्रकाश के अर्थ बहुत से प्रमाण दोनों नामों के विषय में लिख दिये हैं पाठकजन सत्य व असत्य में विवेक करके जाति व देश को इन कलङ्कित नामों से बचाने का उद्योग करें।

पत्र की नक़ल।

श्रीयुत सम्पादक जी * आर्यगजट, नमस्ते-
निम्नलिखित लेखको अपने बहुमूल्य पत्रके किसी

---

* यह आर्य्य सामाजिक साप्ताहिक पत्र उर्दू में फ़ीरोजपुर (पंजाब) से प्रकाशित होता था अब लाहौर से।

(अनुवादक)

स्थान में प्रकाशित करके बाधित कीजियेगा। जो "× नूरअफ़शां" के आक्षेपों में से आर्यशब्द के विषय

पादरी साहब को "आर्य" शब्द के अन्वेषण के साथ प्रथम इस बात का अन्वेषण भी करना चाहिये। जो अधिक आवश्यक है, कि सब भाषाओं में मातृभाषा कौन है और प्राचीनता की शाखा किसे है? पूर्ण निश्चय है कि इसबात का अन्वेषण करते ही उत्तम प्रकार से देववाणी संस्कृत के अतिरिक्त और किसी भाषा का शाखा प्राचीनता व भाषाओं की माता होने का प्रमाणित न होगा। अतः जब संस्कृत ही सब भाषाओं की माता है तो मुख्य कर और जब आर्य्य शब्द इसी भाषा का है। तो साधारण तथा संस्कृत ही ढूंढना उचित है और संस्कृत की कोषों व धातुओं को त्याग कर दूसरी भाषाओं में जो मूल के सामने शाखा के तुल्य हैं, आर्य शब्द (जिसका अन्वेषण करना है।) के धातु व उसके निकलने का स्थान ढूंढना ठीक ऐसा ही है जैसे "* जमैका" के सुवर्ण की खानि पर बैठ कर मोर पंख से सोना निकालने की चिन्ता में शिर मारना। अस्तु पादरी साहेब तो क्या सम्पूर्ण धरा मण्डल पर कोईभी ऐसा देश नहीं जहां के विद्वान् संस्कृत के गौरव व प्राचीनता को उत्तम प्रकार स्वीकार न करते हों और प्रमाण की ओर ध्यान दिलाने

+ नूरअफ़शां–यह ईसाइयों का पत्र लुधियाने से प्रकाशित होता है। अ० वा०

पर उसके सब भाषाओं की माता होने में संदेह करें। अतः पादरी साहब को यदि न मालूम हो तो अब जान लें कि आर्य शब्द के धातु प्रत्यय और अर्थ निम्न लिखित हैं।

आर्य्य—पुलिंग। ऋतुयोग्यः अर्य्यते वा ऋगतौ, ऋहलोर्ण्यत इति स्वामिनि गुरौ-सुहृदि-श्रेष्ठकुलोत्पन्ने पूज्ये श्रेष्ठ-संगत-नाट्योक्तौ-मान्ये उदारचरिते-शान्तचित्ते कर्तव्यमा-चरन्कामम कर्तव्यम नाचरन्। तिष्ठति प्राकृता चारे सतु आर्य्य इतिस्मृतः।

यदि पादरी साहेब संस्कृत जैसी देववाणी के समझने की शक्ति न रखने, के कारण, या हठधर्मी की ऐनक नेत्रों पर लगाने से, केवल अर्वाचीन भाषाओं ही में उत्तम प्रकार विज्ञता रखते हों, तो भी, आर्य शब्द के अर्थ लगभग इन भाषाओं में भी, इस कारण कि वह सब संस्कृत की शाखा हैं, बड़े व प्रतिष्ठित के पाये जाते हैं। जैसे—

* एक टापू का नाम है।

१ आर— फ़ा०—आराय = संवारने वाला।

२ अर्ज- फ़ा० = प्रतिष्ठा—पद।

३ अर्ज—अ० = ऊँचा।

४ आर्यन = नाम एक कवि का।

यद्यपि आर्य शब्द का शब्द सम्बन्धी अन्वेषण, उत्तम भाषा को त्याग के दूसरी भाषा में करना महामूर्खता है तो भी दो लाभ अवश्य हैं। प्रथम यह कि

प्रत्येक भाषा में आर्य शब्द का लगभग एक अर्थ होने से संस्कृत का भाषाओंकी माता होना सिद्ध होसकता है। द्वितीय हमारे एक अमरीकन् भाई के हृदय में आर्य शब्द के प्रतिष्ठा किसी भांति या किसी भाषा द्वारा बैठ जाना। और जो मैंने अपने इस दावे का समर्थन न करके (कि आर्य शब्द का अन्वेषण हर प्रकार संस्कृत में ही होना ठीक है) जो कुछ एक अर्थ के शब्द अन्य भाषाओं के लिख दिये हैं वह केवल पादरी साहब की शान्ति व आर्य शब्द का अर्थ उनके हृदय में बैठाने को ठीक उसी प्रकार लिखे हैं जैसे साहब लोग अपने बच्चों को अक्षर पहचनवाने के लिये चित्रों वाले अक्षर दिखाते हैं।

आप का शुभचिन्तक-हनुमानप्रसाद मास्टर

१ । ६ । ८७ ई० ॥ एङ्गलो वैदिक स्कूल

स्थान छिबरामऊ जि० फर्रुखाबाद.

जिससे हमारी जाति शुद्ध वं यथार्थ नाम व धर्म पर ध्यान दे के आलस्य की निद्रा से जागे और सीधे मार्ग पर स्थित रह के कुत्सित विचारों से दूर रहे।

अब नमस्ते शब्द के विषय में कुछ निवेदन करना चाहता हूं।

हमारे हिन्दु भ्राताओं अपना ठीक नाम आर्य भूल दिया वैसे ही परस्पर मिलने के समय भी बहुत व्यर्थ व ऋषि मुनिकृत ग्रन्थों के विरुद्ध अवसर शब्द वे समझे बूझे प्रचलित हैं। जैसे जयराधेकृष्ण। जयसीता

राम राम २। हरिराम जी। जय हरी। पैरीपोना। बंदगी। पांवलागें। माथा टेकना। नमो नारायण। आदेश। जय शंभु। जय देवी। माता की जय। आशीर्वाद इत्यादि जहां तक अन्वेषण किया गया इन बातों का पुरानी पुस्तकों में चिन्ह तक नहीं है जिससे ठीक सिद्ध है कि पुराने आर्य्य महात्मा उस समय में (जब सत्य धर्म की उन्नति थी) इनका प्रयोग नहीं करते थे और जब से यह बातें काम में लाई गई तब से घर २ में फूट डाह झगड़े के गोबर से चौका फिरा दृष्टि आता है मत मतान्तरों के बखेड़े पृथक् २ इष्टदेव आदि भी इसी अनैक्य व फूट के कारण दिखाई देते हैं नहीं तो एक ईश्वर के भक्त होने से इनका चिन्ह भी मिलना असम्भव होता। आर्यवर्त्त की पवित्र भूमि में प्रतिदिन प्राकृतिक वस्तुओं की पूजा का फैल जाना और आज कल अवनति की उन्नति होना केवल ऐसे ही कारणों से है। और जबलौं भली भांति इन व्यर्थ बातों का खण्डन न होगा, अनैक्य दूर होना असम्भव है जहांलौं सनातन ऋषिमुनि प्रणीत आर्य ग्रन्थों को देखा जाता है "नमस्ते" शब्द का परस्पर प्रयोग करना पाया जाता है जो प्रेम व एकता मिलाप व शील के बढ़ाने के लिये अति उत्तम है। स्यात् किसी भाई को संदेह हो कि नमस्ते शब्द ऋषि ग्रन्थों में कहां पर आया है अतः आवश्यक हुआ कि थोड़े से प्रमाण दे दिये जावें।

कोई २ ब्राह्मण देवता (जिनको सत्यप्रियता से

अपनी इच्छा अधिक प्रिय है। समान जनों में तो नमस्ते का प्रयोग स्वीकार करते हैं परन्तु छोटे से बड़े या बड़े से छोटे के लिये नहीं पसन्द करते, किन्तु अनुचित जानते हैं अतः उचित जाना गया कि तीनों का क्रमानुसार प्रमाण देवें।

(१) तैत्तिरीय उपनिषद्वाक्य—

ओ३म् शन्नो मित्रः शंवरुणः शन्नोभवत्वर्यमा शन्नइन्द्रो बृहस्पतिः शन्नो विष्णुरुरुक्रमः। नमो ब्रह्मणे नमस्ते वायो त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि ऋतं वदिष्यामि सत्यं वदिष्यामि तन्मामवतु तद्वक्तारमवतु अवतु माम् अवतु वक्तारम्।

(२) नमस्ते अस्तु विद्युते नमस्ते स्तनयित्नवे नमस्ते अस्त्वश्मने येनादूडाशे अस्यसि।

अथर्ववेद अ० ३ मं० १ काण्ड १३ मं० १।

(३) यजुर्वेद अध्याय १६ मं० १—

नमस्ते रुद्र मन्यवउतोत इषवे नमः बाहुभ्या मुत ते नमः॥

(४) यजुर्वेद

नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये दिवि येषां वर्षमिषवः। तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्द-

शोध्वीः तेभ्यो नमोअस्तुतेनोमृडयन्तु तेयं द्विष्मोयश्चनो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः ॥

(५) गीता अ० ११ श्लोक ३९

नमो नमस्तेस्तु सहस्रकृत्वः पुनश्चभूयोपि नमोनमस्ते ।

(६) विष्णुसहस्र ना० श्लोक १२३-

नमः कमलनाभायनमस्ते जलशायिने । नमस्ते केशवानन्त वासुदेव नमोस्तुते ।

(७) वि० स० ना० श्लो० १२४-

वासनाद्वासुदेवस्य वासितंभुवनत्रयम् । सर्वभूत निवासोसि वासुदेव नमोस्तुते ।

(८) वि० स० ना० श्लो० १३५—

नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च । जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमोनमः ।

(९) चण्डीपाठ अ० ५ श्लो० ७ से ३४ लौं—

(१०) शि० पु० उत्तरखण्ड अ० १४ श्लोक २४—

तथावर्गोत्कीभवनभूतानामुद्भवाय च । प्रलयायभवद्रात्रिर्नमस्तेकालरूपिणे ।

(११) शि० पु० उ० ख० अ० १४ श्लो०२८—

जगदीशस्त्वमेवासित्वत्तोनास्तीपरईश्वरः । जगदादिरनादिस्त्वं नमस्तस्त्वात्मवेदिने ।

(१२) शि० पु० उ० ख० अ० १४ श्लोक २९-

नमः समुद्ररूपायसंघातकठिनाय च । स्थूलायगुरवे तुभ्यंसूक्ष्मायलघवेनमः ।

(१३) सारस्वत सूत्र २८५-

नमस्ते भगवन्भूगोदेहिमे मोक्षमव्ययम् । स्वामी बांसजहासोच्चैर्दृष्टवानादानयाचनाम् ।

(१४) गुरु गोविन्दसिंह का जाप जी पौड़ी २ से लेकर २८ तक व ३४ से ५७ तक व ६५ से ७१ तक व १४४ व १८३ से १८७ तक व १९८ जाप जी ।

(१५) कथा स० ना० १ श्लोक ५२-

नमः सत्यनारायणायोस्यकर्त्रे नमः शुद्धशाखाय॰ विश्वस्यभर्त्रे । करालायकालाश्मकायास्य हर्त्रे नमस्ते जगन्मङ्गलायात्ममूर्त्ते ।

(१६) यजुर्वेद-

नमोज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च नमः पूर्व जाय चापरजाय च नमोमध्यमायचाप्रग॰ ल्भाय च० ।

(१७) मनुस्मृति अ० २ श्लोक १२७

(१८-२०) मनुस्मृति अ० २ श्लो० १२६-१४८

(२१ २२) „ ३ „ ३६५-५६

यह प्रमाण तीनों अवस्थाओं के प्रयोग के लिये पूर्ण है जिन के द्वारा बड़े, समान व छोटे के लिये नमस्ते का बोलना ठीक है ।

२४ २५-२६ मनुस्मृति अ० ३ श्लोक ५७-५८

अन्य मनुस्मृतियों में भी शतशः स्थानों पर छोटे बड़ों को व बड़े छोटों का सत्कार करें । यह वर्णन है ॥

२७ वा० रा० वनकाण्ड में विश्वामित्र वासिष्ठ की

विदा का वर्णन "नमस्तेस्तु गमिष्यामि"

२८-नमस्य नमस्करणीय(श्री)(स्या)पूजा (प्रतिष्ठा) के योग्य नमस्ते·झुकना सलाम शब्दार्थभानु पृष्ठ १८५

२९-सर्वानुक्रमसूत्र नं० ८ वाक्य २४ में नमस्ते को याग्यवल्क्य जी स्वतन्त्रतापूर्वक व साधारण बोल चाल में वर्तते हैं। हठ धर्मी की औषधि तो धन्वन्तरि व * लुकमान के पास भी नहीं। पर जो सुजन ध्यान देंगे उनपर उत्तम प्रकार विदित होजायगा कि नमस्ते शब्द से उत्तम विस्तृत और अच्छे अर्थ वाला क्या कोई और ऊपर लिखे नामों में से है। जहां लों विचार किया गया कोई नहीं। अतः आवश्यक है कि हम इस प्रेम ऐक्य व शील सिखाने हारे नाम का वर्ताव करें! जिस से जाति व देश की अवन्नति का ध्यान हो कर उसके उद्धार व उन्नति की ओर कटिबद्ध हों, और हिन्दोस्तान को ईश्वर की कृपा व अनुग्रह से फिर आर्यावर्त्त बनावें।

पादरी साहबने नोट (टिप्पणी) में लिखा है कि यदि हिन्दू नाम फारसी में बुरे होने के कारण त्यागने योग्य है तो राम फारसी में गुलाम को, इसी भांति आर्य अर्बी में कपटी जाति को, और वैद्य संस्कृत में हकीम को व फारसी में विना फल के वृक्ष (वेद को) और अनादि जिसका अर्थ संस्कृत में "जिसका आरम्भ न हो अरबी में शत्रुता (अनाद) को कहते हैं वह भी

*यह यूनान में प्रसिद्ध हकीम है—

त्यागना चाहिये। इसका उत्तर हमारी ओर से यह है कि राम, आर्य, वैद्य और अनादि शब्द संस्कृत पुस्तकों में सैकड़ों जगह हैं, पर हिंदू शब्द का नाम तक नहीं अतएव पहल नाम मानने योग्य और दूसरे सुधारने या बदल ने योग्य है। यदि हिन्दू शब्द भी किसी आर्षग्रन्थ में होता तो हमको मानने से कब इनकार था पर बिना प्रमाण (जैसा अबतक हो चुका है) हम किसी प्रकार मानने को त्यार नहीं अतः प्रत्येक मनुष्य को उचित है। कि विचार करके सत्य को ग्रहण करे और आर्य कहाने व नमस्ते बुलाने से किसी प्रकार का भी संकोच न करे।

पादरी—जब दयानन्द ने सुना कि फारसी भाषा में आशीर्वाद का अर्थ क़ैद होने का है, तो इस कारण उन्होंने संस्कृत आशीर्वाद को त्याग दिया और उसके पर नमस्ते ठहराया। परंतु जो आशीर्वाद है वह संस्कृत में उत्तम अर्थ रखता है और बहुत पुराना शब्द है। और मनुस्मृति व अन्य विश्वास योग्य पुस्तकों में बहुत जगह केवल पाया ही नहीं जाता, बरन उसके लिये बहुत ही दृढ आज्ञा दी गई है (म० स्मृ० अ० २ श्लोक १२६)

उत्तर—पा० सा० आपने भूल की और स्वामी जी महाराज पर दोष दिया। स्वामी जी ने कहीं भी आशीर्वाद के त्यागने में मना ही नहीं की और न कभी इसका प्रचार किया। जो शब्द सनातन ऋषियों के

ग्रन्थों में प्रचलित देखा, इसलिये कि वह अति उत्तम था, उसका प्रचार किया। और अनैक्य प्रचारक व सत्य व प्रेम के मिटाने हारे को दूर किया। आपने जो मनु का प्रमाण दिया उस श्लोक में आशीर्वाद शब्द नहीं है। हां अभिवादन व प्रत्यभिवादन है—जो एक सत्कार व दूसरा उत्तर है, जिसको स्वा० जी ने भी उचित बताया है, त्याग नहीं किया। देखो (वेदांग-प्रकाश भाग ४ संख्या २४—२५—२६) अतः यह आक्षेप भी केवल धोखा देना है जो किसी प्रकार उचित नहीं।

पादरी—हिन्दू राजाओं व विद्वानों ने स्वामी दयानन्दजी व उनके पंथवालों के अतिरिक्त कभी कोई आक्षेप हिंदू नामपर नहीं किया। और हिंदुओं की पुस्तकों में इस नाम का प्रचार पाया जाता है। जैसे गुरुनानक जी के आदि ग्रंथ में बराबर इस जातिका नाम हिंदू लिखा है, और गुरुगोविन्दसिंह साहेब को भी फार्सी में अच्छी विद्वता रखते थे कभी यह न जान पड़ा कि जिस जाति से से हम लोग हैं उसका नाम मुहम्मदियों की ओर से बहुत बुरा रक्खा गया है अतः वह बदला जावे।

उत्तर—हिंदू राजों के राज्यों में साधारणतः वर्ण गोत्र अनुसार कार्य्यवाही होती है। और हिंदू नाम मुसलमानों के आने से प्रथम कहीं न था अब भी जो किञ्चित् प्रचार है वह नहीं के तुल्य हैं और वह उर्दू व फ़ारसी की कृपा है। पर राजों को उपाधियों में

अब भी आर्य्य कुलदिवाकर इन्द्र महेन्द्र आदि संस्कृत के यथार्थ शब्द शोभा देते हैं। हिन्दू कहीं नहीं। शेष रहा आर्य्यकुल सत्योपदेशक बा० नानक जी महाराज के आदि ग्रन्थ में हिन्दू शब्द का होना। वह हमे स्वीकार है प्रभाव फ़ारसी की शिक्षा का है और मुसलमान राज्य व देशभाषा में समझने के कारण लिखा, नहीं तो कभी न होता। और न मानपूर्वक उन्होंने इस का वर्णन किया। किन्तु साधारण रीति से सत्धर्म का उपदेश पञ्जाबी भाषा में दिया जिस ने लक्षों हिन्दुओं को मुसलमान होने से बचाना और सत्धर्म पर स्थिर किया। (अधिक देखो " सुर्माचश्मआर्य्य " के उत्तर में) शेष रहा। यह कि वीरता के रूप सत्याग्राही समरविजयी पुरुषसिंह महात्मा गुरुगोविन्दसिंह महाराज को इस नाम का बुरा न जान पड़ता। यह आपकी भूल व अज्ञानता है। यदि आप किंचित् भी उनके इतिहास व आज्ञाओं को जानते होवे तो ऐसा कभी न कहते उन्होंने फ़ारसी में उत्तम योग्यता रखने के कारण इसके बुरे अर्थ को भली भांति समझ के त्याग दिया। और सिक्ख या सिंह प्रत्येक व्यक्ति का नाम रख के अपने समस्त अनुयायियों के समूह का नाम खालसा जाति रक्खा, जिसके अर्थ फ़ारसी में वही हैं जो आर्य्य शब्द के हैं। या यों कहो कि यह उसका शाब्दिक अर्थ है। (देखो ग़यासुल्लुग़ात व मुंतखिब ख़ फ़रह़;) 'खालिस वा ख़ालसा। खास व नयाम-

खतः व चीज व पाक व आमनअ यानी वे आमेंजिश' अर्थ "पवित्र व बिना मिलावट स्वच्छ पदार्थ (अ० ब०) उनके समस्त अनुयायी और सम्पूर्ण पढे लिखे सिंह भाई हिन्दू नाम को बुरा मानते हैं। सिक्ख और सिंह आर्य्य भ्राताओं के समझाने के लिए और खालसा मुहम्मादियों आदि के समझाने को है। अतः यह पक्ष आप का महानिर्मूल है।

पादरी-विचार का स्थान है, कि अकबर बादशाह जो निष्पक्ष प्रसिद्ध है और जिसके समय में बहुत से हिन्दू बुद्धिमान् वैभवशाली मन्त्री, फ़ारसी में पूर्ण योग-ता रखने वाले, स्वतन्त्र विचार के हो चुके हैं। उस समय उन्होंने भी इस नाम पर कुछ आक्षेप न किया। अतः जिस दशा में हिन्दुओं के पुरुषा इसी का प्रचार करते व अपने ऊपर स्वीकार करते रहे हैं और कुछ सन्देह न किया तो इससे ज्ञात होता है कि वह इसे अच्छा जानते थे न कि बुरा।

उत्तर-यह नियम अबतक है। कि दो भाषाओं की परीक्षा व तौल नहीं होती। जब तक इस के लिए स्व-तन्त्रता नहीं मिलती और जबतक दोनों भाषाओं का मनुष्य विद्वान् नहीं होता: तबतक किसी प्रकार की परीक्षा नहीं कर सकता है। और सब संसार जानता कि अमीर व वज़ीर लोग आलसी और राज्यकार्य्य में लगे हुए होते हैं इस कारण धर्म की पड़ताल व छ्री-

तियों के दूर करने का अवसर बहुत ही थोड़ा मिलता है यह भी कोई प्रमाण नहीं है कि उन्होंने कोई आक्षेप नहीं किया जिस प्रकार नहीं है किया कहा जा सकता है इसी भांति हम भी कह सकते हैं कि किया हो तो क्या आश्चर्य यदि कोई लेख नहीं है। सो उसका प्रभाव दोनों पर समान है वह हिन्दुओं के पुरुष भी न थे किन्तु केवल धनी पुरुष थे सांसारिक प्रतिष्ठा के अतिरिक्त हिन्दू किसी मान व प्रतिष्ठा की दृष्टि से उनको प्रतिष्ठित नहीं मानते हैं।

पादरी-हिन्दु और आर्यों को निज नामों के अर्थ अपनी भाषा संस्कृत में देखने चाहियें। न कि फारसी आदि में।

उत्तर—प्रत्येक मनुष्य जो कुछ भी बुद्धि रखता हो। और उसकी बुद्धि को किसी स्वार्थ ने अन्धा न कर दिया हो, वह अवश्य न्याय से कहेगा कि जितना आर्य व आर्यावर्त के सम्बन्ध में स्वीकार व हिन्दू और हिन्दोस्तान के विषय में अस्वीकार किया है, वह उसी अन्वेषण के द्वारा है जो हमने संस्कृत के अनुसार पादरी साहब के कथानुसार की है। इस कारण कि संस्कृत में इन दो शब्दों का कुछ अर्थ नहीं है, और न किसी कोष इतिहास पुराण या धर्मपुस्तक में यह शब्द है। अतः आपके कथनानुसार भी हमको और समस्त देशवासियों को इन बुरे नामों का त्याग आवश्यक है।

हम किञ्चित् भी ऐसा नहीं करते कि संस्कृत शब्दों को फारसी के जीते हुये समझ छोड़ देवें किन्तु हम तो जो सच्ची व धर्मानुसार बात है उसको स्वीकार करके असत्य व बुराई को जो कलंक की नाई विदेशी हठधर्मियों ने लगाये हैं त्याग करते।

और यही आर्यसमाज का चौथा शुभ नियम है कि सत्य के ग्रहण करने "व असत्य के त्याग ने में सर्वथा उद्यत रहना चाहिये" अतः हमने इस नियम पर दृष्टि करके आपके सब आक्षेपों के उत्तर निवेदन कर दिये। प्रत्येक सत्यग्राही को आवश्यक है कि बुरी बातों, बुरे नामों और बुराई से बचने को बड़े पुरुषार्थ से जहां लौं शीघ्र हो सके उद्यत होवे। परमात्मा आप की धार्मिक इच्छाओं की उन्नति करें।

नोट—हिन्दू शब्द के और भी अर्थ हैं। जो इस पुस्तक में नहीं लिखे गये हैं वह भी बुरे ही हैं अतः यहां पर लिख देना उचित समझता हूं। यह मैंने "आर्य्यपत्र" बरेली से उद्धृत किये हैं। "इनकी किताब गयासुल्लागात आदि २ सफहा (पृष्ठ) ५०८ मतबूए मुंशीनवलकिशोर में यह माने लिखे हैं।

हिन्दू के माने।

गुलाम, काफिर, दुज्म (चोर रहज़न) बटमार हबशी, काले रंग वाला, सर्वा, नास्तिक, बेदीन, मुशरिक (ईश्वर के साथ अन्य को शरीक रखने वाला)

तिल, मस्सा, खाल, छुछुन्दर और कुफल के हैं"।
(देखो आ० प० बरेली भाग ३ अंक १ पहला बाबत मास जनवरी सन् १८८६ ई० पृष्ठ ३ कालम १ पंक्ति ५ से ११ तक)

इनमें कई अर्थ इस पुस्तक में आये भी हैं। परन्तु जो यहाँ आये उनके कारण उक्त पंक्तियों की पूरी नकल करदी है छोड़ देना आवश्यक न समझा।

जहां लों ज्ञात हुआ हिन्दू शब्द का उत्तम अर्थ कहीं पाया नहीं जाता खाल तिल ही को कहते हैं। फिर शब्द लिखने का कारण ज्ञात नहीं होता।

॥ इति ॥

आर्य्य भाइयों का शुभचिन्तक—

रामविलास शर्म्मा अनुवादक.

देखने योग्य पुस्तकें।

ध्यान योग प्रकाश।

इस पुस्तक में श्री स्वामी लक्ष्मणानन्द जी ने बड़ी योग्यता से योगकी क्रियाओं का वर्णन किया है प्रथम वार यह हाथों हाथ बिक चुकी है, अब द्वितीय वार छपी है, अवश्य मँगाइये। सजिल्द का मूल्य १।)

बालसत्यार्थप्रकाश।

इस पुस्तक को 'सत्यार्थ प्रकाश' के आधार पर श्री पं० शिवशर्मा जी उपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा ने लिखा है जो कि आर्य बालक तथा बालिकाओं के लिये अत्युपयोगी है। यह नई पुस्तक है, अतः मँगाने में शीघ्रता कीजियेगा। मू० ।≈)

नीतिशतक।

इस पुस्तक में संस्कृत, हिन्दी, अँग्रेजी में श्री भर्तृहरिमहाराज के वाक्यों का वर्णन किया है। जिन को नीतिविषयक ज्ञान प्राप्त करना हो अवश्य मंगावें मू० ।)

जीवन।

इस ग्रन्थ में यह बताया गया है कि मनुष्य को इस संसार में अपने कर्त्तव्य का पालन किस प्रकार से करना चाहिये। पुस्तक प्रत्येक मनुष्य के देखने योग्य है मू० ॥)

श्रीमान् छत्रपति शिवाजी का जीवनचरित्र।

(लेख—देशभक्त लाला लाजपतराय)

यह लिखने की आवश्यकता नहीं है कि यह पुस्तक कैसी है जिस पुरुष का इसके अन्दर जीवन वृत है यह सर्व साधारण से छिपा नहीं है कि यवनदल से विचलित होती हुई इस हिन्दुजाति को बचाने वाला यही वीर यही रणधीर यही शत्रुजित् था इसका चरित्र कैसा होगा पाठक स्वयं समझ सक्ते हैं। अपने को तथा अपने बच्चों को धर्मवीर और सदाचारी बनाने की इच्छा है तो उक्त वीरशिरोमणि का जीवन चरित्र स्वयम् पढ़िये और पढ़ाइये उसके पहिले उपकारों का स्मरण कीजिये मूल्य केवल ॥=)

श्रीकृष्णका चरित्र लेखक उक्त श्रीलाला लाजपतराय जी मूल्य ।॥) ब्रह्मचारी भीष्म ।=) मोहम्मद साहिब का चरित्र ॥=) हकीकत राय धर्मी =) सिक्खों के दशगुरु ॥=) स्वामी वृजानन्दजी =) फ्रैंकिलन वैंजमिन जिसने अमरिका कोस्वतंत्र किया ॥=) भारतवर्ष का इतिहास २) स्वामी दयानन्द जी का जीवनचरित्र १॥) लेखराम जी का चरित्र १)

पुस्तकें मिलने का पता—

पं० शङ्करदत्त शर्मा

वैदिक पुस्तकालय मुरादाबाद.